इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, बुधवार, 23 सितम्बर 2026

सभी प्रमुख धार्मिक परम्पराएं मूल रूप से एक ही संदेश देती है प्रेम, दया और क्षमा, महत्वपूर्ण बात यह है कि ये हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा होनी चाहिये।

-दलाई लामा

वर्ष 19 अंक 22 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

तापमान - अधिकतम 35.2°C (+1.7) न्यूनतम 26.0°C(+1.6) सेंसेक्स 74,529.08 (-329.91) निफ्टी 23,329.00 (-085.30) सोना 1,53,330 चांदी 2,50,000 मुद्रा - डालर 95.63 दिरहम 26.03 रियाल 25.50

भूलने को उम्र का असर मानकर न करें नज़रअंदाज़

◉ एरा विश्वविद्यालय में मनाया गया विश्व अल्जाइमर दिवस

लखनऊ (सं)। बुजुर्ग के बार-बार बातें भूलने या परिचित लोगों को पहचानने में परेशानी को सिर्फ बढ़ती उम्र का असर मानकर नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है। अल्जाइमर और डिमेंशिया के शुरुआती लक्षणों की पहचान और समय पर प्रबंधन मरीज के साथ-साथ पूरे परिवार के लिए अहम है। एरा यूनिवर्सिटी के क्लिनिकल साइकोलॉजी विभाग की ओर से मंगलवार को विश्व अल्जाइमर दिवस पर आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने यह बातें कही।

कार्यक्रम में डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के मनोरोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अब्दुल कादिर जिलानी ने डिमेंशिया की बढ़ती अवस्था और अलग-अलग चरणों में सामने आने वाले बदलावों पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शुरुआती लक्षणों को पहचानना बेहद जरूरी है। मरीज की देखभाल केवल दवा या चिकित्सकीय प्रबंधन तक सीमित नहीं है। परिवार के सदस्यों और केयरगिवर्स का धैर्य, बातचीत व भावनात्मक सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि बीमारी बढ़ने के साथ मरीज को दैनिक गतिविधियों, सुरक्षा और संवाद में मदद की जरूरत बढ़ सकती है। ऐसे में परिवार को मरीज की स्थिति समझकर व्यवहार करना चाहिए। कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति प्रो. अब्बास अली महदी और प्रो-चांसलर प्रो. फरजाना महदी के निर्देशन में हुई। विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्णा दत्त ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में न्यूरोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. आरके गर्ग और डिप्टी रजिस्ट्रार डॉ. गजाला जैदी मौजूद रहीं। इसके बाद पैनल चर्चा में मनोवैज्ञानिक देखभाल, क्लिनिकल प्रबंधन, पोषण और परिवार की भूमिका पर विशेषज्ञों ने विचार साझा किए। इसमें प्रो. प्रिसिला सैमसन, डॉ. कुशाग्र वर्मा और डॉक्टर कहकशां परवीन शामिल हुईं।